लक्ष्मी नारायण दुबे महाविद्यालय,

मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण

आदिकालीन नाथ साहित्य

डॉ. सन्तोष विश्नोई, सहायक प्रोफेसर,

हिन्दी विभाग

* नाथ साहित्य :- नाथ काव्यधारा आदिकालीन साहित्य की प्रमुख धारा है। जिसका प्रणयन नाथों ने किया।

हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार :- "लेखक ने नाथ पंथ या नाथ संप्रदायक सिद्ध संप्रदायक ~~का~~ एक ~~विचित्र रूप है। जिसमे बौद्ध परंपरा के साथ~~ कुछ विचारों को स्वीकार ~~किया~~ सिद्ध मत, सिद्ध मार्ग योग मार्ग योग संप्रदायक औघुत मार्ग एवं औघुत संप्रदायक नाभी नाम भी प्रसिद्ध है।

नाथ संप्रदायक सिद्ध संप्रदायक का विचित्र रूप है। जिसमें बौद्ध परंपरा के साथ कुछ विचारों को स्वीकार किया गया है। अंतिम सिद्ध मचेन्द्रनाथ जब विषय भोग में फस गए थे। तब गोरखनाथ ने 'जाग मचेन्द्र गौरख आया।' सिद्ध वृत का प्रयोग प्रदान कि यह मुक्ति तात्विक अर्थ में संसारिक आकर्षनों से मुक्ति थी।

नाथ शब्द का अर्थ भी यही है 'जो मुक्ति प्रदान करे। गोरखनाथ इस मत के प्रवर्तक माने जाते है।

संप्रदायक में कुल नौ नाम है, डा० रामकुमार वर्मा के अनुसार नौ नाथों का नाम निम्नलिखित है:—

(1) आदिनाथ
(2) मचेन्द्रनाथ
(3) गोरखनाथ
(4) गहनिनाथ
(5) चरपटनाथ
(6) चौरंगीनाथ
(7) ज्वलेन्द्रनाथ
(8) भूपीनाथ
(9) गोपीचन्द्रनाथ

* आदिनाथ :- आदिनाथ को परवर्ती संतों ने शिव माना है। नाथों ने अपनी संप्रदायिक धार्मिक मान्यताओं के लिए जो साहित्य रचा नाथ साहित्य कहलाता है।
नाथ पंत के योगियों को कनफटा भी कहा गया है। नाथ साहित्य का संवेदना पक्ष उनके सांप्रदायिक मान्यताओं से उत्प्रेरक है। सिद्धों के विपरीत इनकी मूल मान्यता है कि मुक्ति के लिए इन्द्रिय भोग नहीं बल्कि इन्द्रियों नियमन निय या संयम आवश्यक है।
इन्होंने सिद्धों के "प्रवृति मार्ग के विरुद्ध निवृति मार्ग की स्थापना की गोरखनाथ कहते है।

"नौ लाख पातरि आगे नाचे पिछे सहज अखारा
ऐसो मन लै जोगी खेले तब अंतरी ऐसा भंडार।।"

नाथों का मानना है कि परम अध्यातमक तत्वों तक वही साधक पहुँच पाता है जो संसारिक भोग से मुक्त हो चुका है।
नाथों ने एक विशेष प्रकार की साधना पद्धति पर बल दिया जिसे 'हठ' योग की पद्धति कहते है जिसका अर्थ है योग की साधना की माध्यम से है 'ह' अर्थात् सूर्य 'ठ' अर्थात् चंद्रमा का मिलना करा देना। अतः इंद्रियों के स्वभाव को पलट देना। नाथों की मान्यता है।
' जोई - जोई पेण्डे सोई ब्रह्मांडे।'
अर्थात् - व्यक्ति के अंदर जो कुण्डलनी होती है। वह ब्रह्माण्ड में व्याप्त महाकुण्डलनी का लघु रूप है। हठ योग प्रक्रिया के अंतर्गत कुण्डलनी जागरण तथा सत्य चक्र भेदन का अभ्यास किया जाता है।

साहित्य की अन्य संवेदनागत विशेषताओं में बाह्य आडंबर का विरोध वर्ण व्यवस्था पर चोट, गुरु का महत्व आदि शामिल है। नाथ मूलतः कवि नहीं है वे केवल अपनी मान्यताओं के प्रचार हेतु कविताएँ लिखते है, इसलिए इनके साहित्य में शिल्प की बारीकियाँ नहीं दिखाई पड़ती। इनका काव्य (मुक्तक) रूप में रचा गया है। और इनकी भाषा अपभ्रंश व पुरानी हिन्दी के संक्रमण काल की है। ब्रज, अवधि तथा पंजाबी अंतः साधनात्मक अनुभूतियों को इन्होंने एक विशेष प्रतिगात्मक भाषा के रूप में उपयोग किया है। जिसे 'संधा' भाषा कहते है। इस भाषा में साधारण भाषा के विपरीत उक्तियाँ मिलती है। जो प्रतिकार्थ अर्थ खुलने में ही स्पष्ट होती है।

"नाथ बोले अमृतवाणी
बरसेगी कम्बली भीजेगा पाणी।"

छंदों के स्तर पर इन्होंने भी दोहा आदि का प्रयोग किया है।

नाथ साहित्य का विशिष्ट गुण यह है कि इसमें सामाजिक विषमताओं तथा अनियंत्रित भोग वासनाओं का विरोध किया गया है। इसकी सीमा यह है कि इसमें गृहस्थ जीवन और नारी का अवमूल्यन हुआ है।

* जैन में प्रथम कवि – स्वयंभू – जिन्हें अपभ्रंश काल का वाल्मीकि माना जाता है।

* कवि – हेमचंद, रचना – शब्दानुशासन (जैनधर्मावली)

गोरखनाथ और नाथ साहित्य

नाथ संप्रदाय को सिद्धों की परंपरा का विकसित रूप माना गया है। इस संप्रदाय में 'नाथ' शब्द का प्रयोग विशेष अर्थ का द्योतक है। वेदों में नाथ शब्द का प्रयोग रक्षक या शरणदाता के लिए किया गया है। पौराणिक काव्य ग्रंथों में 'स्वामी' या 'पति' के अर्थ में इस शब्द का प्रयोग मिलता है। जैनों और वैष्णवों में 'नाथ' शब्द का प्रयोग बड़े देवता के अर्थ में हुआ है। शैव मतानुसार 'नाथ' शब्द 'शिव' के लिए प्रयुक्त होता है। नाथ संप्रदाय की व्याख्या के अनुसार 'ना' का अर्थ है – अनादिरूप तथा 'थ' का अर्थ है स्थापित होना।

नाथ पंथ के अनुयायी शिव की उपासना करते हैं तथा अपनी साधना में तंत्र मंत्र के साथ योग साधना को अधिक महत्व देते हैं, इसी कारण इन्हें योगी भी कहा जाता है। ऐसी मान्यता है कि 9वीं तथा 10वीं शताब्दी में नेपाल की तराई में शैव और बौद्ध साधनाओं का सम्मिश्रण हुआ। इसी से नाथ पंथी योगियों का विस्तार हुआ। अधिकांश विद्वानों का मानना है कि सिद्धों की सहज साधना की प्रतिक्रिया के कारण नाथपंथ की स्थापना हुई। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी नाथों का समय 9वीं शताब्दी का मध्यभाग मानते है और अधिकतर विद्वानों ने इसी मत का समर्थन किया है। जहाँ सिद्धों की संख्या 84 बताई गई है, वहाँ नाथों की संख्या 9 मानी गई है। इन नौ नाथों में आदिनाथ, मत्स्येन्द्रनाथ, गोरखनाथ, चर्पटनाथ, चौरंगीनाथ आदि प्रमुख है।

नाथों की वेशभूषा विशेष प्रकार की थी। ये लोग मेखला, शृंगी, गूदड़ी, खप्पर, कर्णमुद्रा, झोला आदि धारण करते थे। कान को चीरकर ये कुंडल पहनते थे इसलिए इन लोगों को 'कनफटा योगी' भी कहा जाता है। नाथपंथ के आदि प्रवर्तक आदिनाथ का स्वयं शिव माने जाते हैं। मत्स्येन्द्रनाथ इन्हीं के शिष्य थे। गोरखनाथ को मत्स्येन्द्रनाथ का शिष्य कहा गया है। ऐसी मान्यता है कि गोरखनाथ ने सभी बिखरे हुए नाथपंथियों का संगठन किया तथा उन्हें १२ शाखाओं में बाँटा। गोरखनाथ पहले सिद्ध थे बाद में नाथपंथी हो गए। इन्होंने जिस योगमार्ग को चलाया वह 'हठयोग' था।

हठयोग में सांसारिक आकर्षणों को हठपूर्वक रोका जाता है। इसके लिए शरीर में शक्ति-रूपा कुंडलिनी को जगाकर शिव के निवास स्थित सहस्त्रार चक्र में ले जाया जाता है। इस प्रकार शिव से शक्ति का योग ही 'हठयोग' है। 'हठ' शब्द में 'ह' का अर्थ सूर्य और 'ठ' का अर्थ चन्द्रमा भी व्याख्यायित किया गया है। इस प्रकार हठयोग का अर्थ सूर्य और चंद्रमा का संयोग भी लक्षित होता है।

हठयोग की साधना शरीर पर आधारित है। कुंडलिनी को जगाने के लिए आसन, मुद्रा, प्राणायम और समाधि का सहारा लिया जाता है।

गोरखनाथ ने जो पंथ चलाया वह गोरखनाथ के नाम से भी जाना गया। ऐसी जनश्रुति है कि शिव जब इस ज्ञान का उपदेश पार्वतीजी को दे रहे थे तो मत्स्य रूप धारण कर मत्स्येन्द्रनाथ ने वह ज्ञान प्राप्त कर लिया और बाद में उन्होंने यह ज्ञान गोरखनाथ को दे दिया।

वास्तव में गोरखनाथ ने नाथ संप्रदाय को व्यवस्थित किया और उसे व्यापक रूप प्रदान किया। विद्वानों ने इन्हें शंकराचार्य के बाद दूसरा प्रभावकारी व्यक्ति माना है। इनके योगदान अप्रत्यक्ष प्रभाव भक्तिआंदोलन के संत साहित्य में दर्शित होता है।

गोरखनाथ एवं उनकी परंपरा के अन्य शिष्यों - चर्पटनाथ, गोपीचंद्र, चौरंगीनाथ आदि द्वारा लिखी गई अनेक रचनाएँ मिलती हैं जिनकी भाषा हिंदी है। इनमें से गोरखनाथ के नाम से लगभग 40 रचनाएँ मिलती हैं। किंतु इनकी प्रमाणिकता के विषय में संदेह है। डा० पीतांबर दत्त बड़थ्वाल ने केवल 14 रचनाओं को इनके द्वारा रचित माना है, जिनमें सबदी, पद, नरवैबोध, आत्मबोध, मछीन्द्र - गोरख बोध, ज्ञान तिलक, पंचमात्रा आदि प्रमुख हैं। इन्होंने गोरखनाथ की पुस्तकों का एक संग्रह गोरखबानी के नाम से प्रकाशित कराया है।

गोरखनाथ का काल सांप्रदायिक दृष्टि से बहुत अव्यवस्थित था। बौद्ध मत, ब्राह्मण मत के साथ इस्लाम का आगमन भी लगभग इस समय तक हो चुका था। ऐसे समय में गोरखनाथ का योगमार्ग एक शक्तिशाली लोक और धार्मिक आंदोलन के रूप में भी उभरा। गोरखनाथ ने हठयोग साधना पर बल दिया, जिसके अंतर्गत गुरु महिमा, योगपरक साधना, ब्रह्मानंद की स्थापना, नारी के प्रति सचेत दृष्टिकोण, शून्य की कल्पना, नाड़ी साधना आदि इनके काव्य के प्रतिपाद्य विषय हैं।

सिद्ध के साहित्य के अनुसार समान नाथ साहित्य में गुरु की महिमा का प्रतिपादन किया गया है। गोरखनाथ के अनुसार एकमात्र ही गुरु

हो सकता है। अवधूत वह होता है जिसके प्रत्येक वाक्य में वेद का निवास होता है। उसका हर कदम तीर्थ होता है। उसकी दृष्टि में मोक्ष रहता है। जिसके एक हाथ में त्याग तथा दूसरे में भोग रहता है, फिर भी वह इन दोनों से दूर रहता है। गोरखनाथ के अनुसार गुरु ही समस्त श्रेयों का मूल है। गोरखनाथ कहते हैं-
"गगन मंडल में कँधा कुवां, तहाँ अमृत का वासा।
सगुरा होइसो भरि-भरि पीवै निगुरा जाइ पियासा॥"
अर्थात आकाश मंडल में एक